यूपीईएस के दीक्षांत समारोह में पहुंचे केंद्रीय मंत्री, न्याय की देवी के आंखों से पट्टी हटाने के निर्णय को सराहा

फैसला नहीं न्याय देने वाले बनें : मेघवाल

दीक्षांत समारोह

देहरादून, वरिष्ठ संवाददाता। केंद्रीय कानून एवं न्याय राज्यमंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि जब न्याय अंधा नहीं है तो उसकी आंखों में पट्टी क्यों? पूर्व मुख्य न्यायाधीश का न्याय की देवी की आंखों से पट्टी हटाना शानदार फैसला रहा। ये न्यायिक परिदृश्य को नया आयाम देगा। केंद्रीय मंत्री शुक्रवार को यूपीईएस के दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि फैसला देने वाला नहीं, बल्कि न्याय देने वाले बनें। किसी भी मामले में आप कागज देखकर फैसला दे सकते हैं, लेकिन जब आप न्याय के लिए अपना फैसला सुनाएंगे तो आप सबसे बड़े व्यक्ति बन जाएंगे। उन्होंने कहा कि हमारे संविधान में समानता को बढ़ावा दिया गया है, ताकि देश के हर वर्ग के व्यक्ति की स्वतंत्रता बनी रही। इससे पहले उन्होंने छात्रों को डिग्री प्रदान की। शुक्रवार को स्कूल ऑफ लॉ के मेधावी छात्र-छात्राओं को पदक देकर सम्मानित किया गया। विवि के कुलपति डॉ. राम शर्मा ने कहा कि पहली बार दीक्षांत समारोह सात दिन चलेगा। इसमें 26 नवंबर तक विवि के सभी सात विद्यालयों के छात्रों को डिग्री प्रदान की जाएगी। समारोह में इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर, उत्तराखंड के महाधिवक्ता एसएन बाबुलकर, स्कूल ऑफ हेल्थ साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी में सीएसआईआर के निदेशक जनरल डॉ. कलईसेलवी, आईएनएसईआरएम पेरिस के निदेशक डॉ. श्रीनि कावेरी आदि मौजूद रहे।

दून स्थित यूपीईएस के दीक्षांत समारोह में शुक्रवार को स्कूल ऑफ लॉ के छात्र-छात्राओं को डिग्रियां प्रदान की गई। • हिन्दुस्तान

यूसीसी पर भ्रम न फैलाएं

उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) के सवाल पर केंद्रीय राज्यमंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि यूसीसी को लेकर भ्रम फैलाया जा रहा है। यूसीसी को हर धर्म, जाति के लोगों की सुरक्षा को देखते हुए तैयार किया गया है। न्यायालयों में लंबित मामलों के निपटारे वाले सवाल पर उन्होंने कहा कि इस मामले पर सरकार के साथ सुप्रीम कोर्ट भी चिंतित है। इसके साथ वाणिज्यिक न्यायालय की संख्या बढ़ाई जा रही हैं। इसके अलावा कुछ कानूनों में भी संशोधन किया गया है।

केंद्रीय मंत्री मेघवाल ने गीत भी सुनाया

केंद्रीय राज्यमंत्री ने भारतीय कानून की विशिष्ट नींव पर जोर देते हुए बताया कि यह हमारी संस्कृति और समाज की गहराई से प्रेरित है। उन्होंने स्नातकों को उनके भविष्य को न्यायाधीश, अधिवक्ता, विधिक क्षेत्र के नेताओं के रूप में आकार देने की उनकी क्षमता पर प्रेरित किया। आखिर में उन्होंने अब सौंप दिया है इस जीवन का सारा भार तुम्हारे हाथों में गीत गाकर सभी को प्रेरित किया। जिससे वहां जमकर तालियां बजी।